उत्तराखंड में सोपस्टोन खनन

चर्चा में क्यों?

हाल ही में **उत्तराखंड** उच्च न्यायालय ने स्वतः संज्ञान लिया और **उत्तराखंड के बागेश्वर ज़िले** में सोपस्टोन खनन को विनियमित करने में विफल रहने के लिये अधिकारियों की आलोचना की।

मुख्य बिंदु

- **पर्यावरणीय चिंता:**
  - **भूमि अवतलन:**
    - उत्तराखंड में **भू-धँसाव एक गंभीर समस्या है, जो बागेश्वर के कांडा-कन्याल जैसे संवेदनशील क्षेत्रों** में खनन गतिविधियों के कारण और भी गंभीर हो गई है।
    - खनन कार्य, **मृदा अपरदन,** संसाधनों का निष्कासन और **भूकंप** इस समस्या को बढ़ाते हैं।
  - **ढलान अस्थिरता:**
    - नाजुक ढलानों पर खनन से **संरचनात्मक अखंडता दुर्बल होती है,** जिससे ऊपरी ढलानों पर स्थित गाँव प्रभावित होते हैं।
    - **दोमट और ढीली मृदा से कटाव की संभावना बढ़ जाती है,** विशेषकर **मानसून के दौरान।**
  - **अपर्याप्त सुरक्षा उपाय:**
    - हरित पट्टियों, अवरोधक दीवारों, बफर जोन, ढलान निगरानी और सुरक्षात्मक संरचनाओं का अभाव कटाव को बढ़ाता है।
    - **जल और वायु प्रदूषण:**
    - खनन गतिविधियों के कारण क्षेत्र में **जल की कमी, प्रदूषण और वायु प्रदूषण** होता है।
  - **सांस्कृतिक चिंताएँ:**
    - **पारंपरिक वास्तुकला पर प्रभाव:**
    - भूमि धँसने से **कुमाऊँनी बाखली आवास स्थानों को नुकसान पहुँचा है,** जो ऐतिहासिक रूप से भूकंपरोधी क्षमता रखते थे।
  - **विरासत को क्षति:**
    - **सांस्कृतिक और धार्मिक महत्त्व के 10वीं सदी के स्थल** कांडा **में कालिका मंदिर के फर्श** में दरारें खनन से संबंधित गिरावट का संकेत देती हैं।
    - **लोक संगीत, नृत्य और हस्तशिल्प** सहित क्षेत्र की सांस्कृतिक प्रथाएँ **भी प्रभावित होती हैं।**
  - **प्रशासनिक चूक:**
    - राज्य और केंद्र सरकारें **"अर्द्ध-यंत्रीकृत खनन" को परिभाषित करने में विफल रहीं,** फिर भी उन्होंने ऐसी गतिविधियों के लिये पर्यावरणीय मंज़ूरी दे दी।
    - स्पष्ट नीतिगत सीमाओं के बिना भारी उपकरणों के उपयोग से स्थिति और खराब हो गई है।

सोपस्टोन

- सोपस्टोन एक **नरम रूपांतरित चट्टान है जो टेल्क तथा क्लोराइट, डोलोमाइट और मैग्नेसाइट** की भिन्न-भिन्न मात्राओं से बनी होती है।
- **उपयोग:**
  - **सोपस्टोन का उपयोग इसकी स्थायित्व और सौंदर्य अपील** के कारण उद्योगों में **मूर्तियाँ, काउंटरटॉप्स, सिंक और टाइलें बनाने के लिये व्यापक रूप से किया जाता है।**
  - इसकी उत्कृष्ट ऊष्मा प्रतिरोधकता के कारण इसका उपयोग **स्टोव, फायरप्लेस और प्रयोगशाला काउंटरटॉप्स में किया जाता है।**
  - **पिसा हुआ सोपस्टोन कागज, सौंदर्य प्रसाधन और पेंट** में भराव के रूप में काम आता है।
  - इसका उपयोग **बर्तन, हस्तशिल्प और मूर्तियाँ बनाने के लिये भी किया जाता है।**
- **भारत में उपलब्धता:**
  - भारतीय खान ब्यूरो के अनुसार, **राजस्थान (57%) और उत्तराखंड (25%) में महत्त्वपूर्ण भंडार हैं।**
  - **राजस्थान:** सबसे बड़ा उत्पादक, विशेष रूप से उदयपुर, डूंगरपुर और भीलवाड़ा क्षेत्र में।
  - **उत्तराखंड:** बागेश्वर, पिथौरागढ़ और अल्मोडा ज़िलों में उल्लेखनीय जमा।
  - **तमिलनाडु और कर्नाटक:** यहाँ भी छोटे भंडार मौजूद हैं।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/soapstone-mining-in-uttarakhand